[This question paper contains 4 printed pages.] 11/12/24

Your Roll No...............

आपका अनुक्रमांक.............

LIBRARY

Sr. No. of Question Paper : 1662 **I**

Unique Paper Code : 2052102301

Name of the Paper : Bhartiya Sahitya

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (10 + 10 + 10)

(क) वत्स ! स्वच्छ प्रसन्न जल की
देख निर्मल कान्ति,
याद आती सन्त मन की
विगत कल्मष शांति !

P.T.O.

कलश रख दो और दे दो

मुझे वल्कल चीर,

यहीं अवगाहन करूँगा

धार यह गम्भीर।

अथवा

टहरी पर बैठी होगी, पड़े होंगे सामने फूलों के

सहारे गिर रही होगी

अवधि के बाकी महीनें

बिताए दिनों के सम्पर्क सुख की

यादों का ले रही होगी मन ही मन स्वाद

बिछुड़ी प्यारी के यही तो होते हैं

साधन।

(ख) पिया को खोजने में निकली

सुन ही यह दिन बीता

कब यह रात ढली!

मिले अंत में घर में ही तो

मेरे कंत छली !

मेरे उनके स्नेह मिलन की

थी यह घड़ी - भली ।

अथवा

हम सब समान हैं, समानता का आया युग, आया !

मिट रहा कपट, निश्छल जनता का आया युग, आया !

जो सच्चे हैं, वह बड़े ! उन्हीं का आया युग, आयां !

यह प्रलय काल दुर्जन कपटी का ! आया युग, आया!

आओ नाचें - गायेंगे जी भर, मोद मनायेंगे !

आनंद छंद मय स्वतंत्र्ता पर मोद मनायेंगे !

(ग) संसार की भाषाओं की भिन्नता के सम्बन्ध में उसे ज्ञानदान करने के लिए मेरे प्रवृत होने के पहले ही वह दूसरे प्रसंग पर चली गई। 'देखो पिताजी, भोला कह रहा था कि आकाश में हाथी सूंड से पानी डालता है, उसी से वर्षा होती है ओ माँ ! भोला कैसी बेकार की बातें करता है ! खाली बकबक करता रहता है! दिन-रात बकबक लगाए रहता है।'

अथवा

नेहबि राम राक्षस लागि मागि ।

आहे अधिक हृदये दहे आगि ।।

बालक राम किछुवे नाहि जाने ।

ता हेरि रह नाहि प्राणे ।।

2. वैदिक एवं अपभ्रंश भारतीय साहित्य पर विस्तार से चर्चा कीजिए । (15)

अथवा

मैथिली भाषा के साहित्य पर एक निबंध लिखिए।

3. कालिदास रचित 'उत्तरमेघ' के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

'सप्त पर्ण' राम काव्य का जन्म का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. संत नामदेव के पदों का भाव सौंदर्य लिखिए। (15)

अथवा

ललद्यद के पदों का भाषा सौष्ठव लिखिए।

5. 'काबुलीवाला' कहानी का मूल संदेश स्पष्ट कीजिए ।। (15)

अथवा

'रामविजय' नाटक की तात्विक समीक्षा कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.] 18/12/24

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 1720 **I**

Unique Paper Code : 2052102302

Name of the Paper : Hindi Natak Evam Ekanki
हिन्दी नाटक एवं एकांकी

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) अँगरेराज सुख साज सजे सब भारी ।
पै धन बिदेश चलि जात इहै अति ख्वारी ।।
ताहू पै महँगी काल रोग बिस्तारी ।

P.T.O.

दिन दिन दूने दुःख ईस देत हा हा री ।।
सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई ।
हा हा! भारतदुर्दशा न देखी जाई ।।

अथवा

हा! यह वही भूमि है जहाँ साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण चंद्र के दूतत्व करने पर भी वीरोत्तम दुर्योधम ने कहा था, "सूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव" और आज हम उसी भूमि को देखते हैं कि श्मशान हो रही है। अरे याहँ की योग्यता, विद्या, सभ्यता, उद्योग? उदारता, धन, बल, मान, दृढ़चित्तता, सत्य सब कहाँ गये? अरे पामर जयचन्द्र! तेरे उत्पन्न हुए बिना मेरा क्या डूबा जाता था? हाय! अब मुझे कोई शरण देनेवाला नहीं। (रोता है) मात; राजराजेश्वरी, विजयिनी! मुझे बचाओ। अपनाए की लाज रक्खो।

(ख) मैं केवल यही कहना चाहती हूँ कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-सम्पत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है। वह मेरे साथ नहीं चल सकता। यदि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते, अपने कुल की मर्यादा, नारी का गौरव नहीं बचा सकते, तो मुझे बेच भी नहीं सकते हो। हाँ, तुम लोगों को आपत्ति से बचाने के लिए मैं स्वयं यहाँ से चली जाऊँगी।

अथवा

राजनीति! राजनीति ही मनुष्यों के लिए सब कुछ नहीं है। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्व मानव के साथ व्यापक सम्बन्ध है। राजनीति की साधारण छल्नाओं से सफत्लता प्राप्त करके क्षण-भर के लिए तुम अपने को चतुर समझने की भूल कर सकते हो, परन्तु इस भीषण संसार में एक प्रेम करने वाले हृदय को खो देना, सबसे बड़ी हानि है शकराज! दो प्यार करने वाले हृदयों के बीच में स्वर्गीय ज्योति का निवास है।

(ग) पुरुष वही है जो हत्या करे, रक्तपात में हर्षित हो, हिंसा की हुंकार में जीवन - संगीत ढूँढे। निर्मम, क्रूर, बर्बर, अंधा, बहरा- ऐसा होता है पुरुष। (व्याकुलता से) हम ऐसे पुरुष क्यों नहीं हैं? क्यों हमसे दूसरों का दुख देखा नहीं जाता? क्यों हम दूसरों को कष्ट में देखकर करुणा से भर जाते हैं? क्यों दूसरों की पीड़ा देखकर हमारी आँखों में आँसू आ जाते हैं? क्यों हैं हम ऐसे दुर्बल?

अथवा

मुझे गंदगी से घृणा नहीं, किंतु मैं गंदगी पसंद नहीं करता - बड़ा नाजुक सा फ़र्क है। यदि हमें जीवन का सामना करना है, तो रोज गंदगी से दो-चार होना पड़ेगा, फिर इससे घृणा कैसी? जिन ग़रीबों को तुम अपने बरामदे के फ़र्श पर पाँव न रखने दो, मैं उनके पास घंटों बैठ सकता हूँ।

2. 'भारत दुर्दशा' एक प्रतीक नाटक है- उदाहरण सहित विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

'भारत दुर्दशा' नाटक में चित्रित समस्याओं पर सविस्तार विचार कीजिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का प्रतिपाद्य स्पष्ट करते हुए, इसकी प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' में चित्रित स्त्री प्रश्नों पर सोदाहरण विचार कीजिए।

4. 'कथा एक कंस की' नाटक का केंद्रीय विचार लिखिए। (15)

अथवा

'कथा एक कंस की' नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए।

5. 'उत्सर्ग' एकांकी का मूल भाव सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'तौलिये' एकांकी की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

23/12/24

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 1771 **I**

Unique Paper Code : 2052102303

Name of the Paper : Samanya Bhasha Vigyan

Name of the Course : **B.A (Hons.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य है ।

1. भाषा की परिभाषा देते हुए उसके स्वरूप की विवेचना कीजिए ।

अथवा

भाषा की संरचना के प्रमुख स्तर का उल्लेख कीजिए । (15)

2. हिन्दी भाषा की विशेषताएं का उल्लेख कीजिए ।

अथवा

P.T.O.

भाषिक दृष्टि से उपयोगी प्रमुख ध्वनियों का उल्लेख कीजिए। (15)

3. वाक्य संरचना के आधार और भेद का उल्लेख कीजिए।

अथवा

वाक्य के प्रकारों का वर्णन कीजिए। (15)

4. अर्थ की परिभाषा और स्वरूप का उल्लेख कीजिए।

अथवा

अर्थ परिवर्तन के कारण और दशाओं का उल्लेख कीजिए। (15)

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी कीजिए। (10, 10, 10)

(क) हिन्दी भाषा का स्वरूप

(ख) हिन्दी भाषा की संरचना

(ग) भाषा विज्ञान की अध्ययन पद्धतियां

(घ) वाक्य संरचना के तत्व

(ङ) वाक्य का स्वरूप

(च) अर्थ निर्णय के साधन

19/12/24

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 6701 **I**

Unique Paper Code : 12051302

Name of the Paper : हिन्दी कविता (आधुनिक काल-छायावाद तक)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8,7)

(क) वह हँसी बहुत कुछ कहती थी,

फिर भी अपने में रहती थी,

सबकी सुनती थी, सहती थी,

देती थी सबके दाँव, बन्धु !

अथवा

पड़ी रह तू मेरी भव-भुक्ति !
मुक्ति हेतु जाता हूँ यह मैं, मुक्ति, मुक्ति, बस मुक्ति !
मेरा मांस हँस सुनेगा और कौन सी युक्ति?
मुक्ताफल निर्द्वन्द्व चुनेगा, चुन ले कोई शुक्ति।

(ख) तुम्हारे कुंजों में तल्लीन, दर्शनों के होते थे वाद
देवताओं की प्रादुर्भाव, स्वर्ग के सपनों के संवाद
स्निग्ध तरु की छाया में बैठ, परिषदें करती थीं सुविचार-
भाग कितना लेगा मस्तिष्क, हृदय का कितना है अधिकार

अथवा

"सच है, मेरी आस उसे,
मुझपर अटूट विश्वास उसे,
हाँ, सच है मेरे ही बल पर,
ठाना है उसने महासमर।
पर मैं कैसा पापी हूँगा,
दुर्योधन को धोखा दूँगा?"

2. यशोधरा के 'दीन न हो गोपी' का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

यशोधरा में अभिव्यक्त विरह-वर्णन की समीक्षा कीजिए।

3. पाठ्यक्रम में संकलित 'लहर' की कविताओं के आधार पर प्रसाद की काव्यभाषा का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

'तुम्हारी आँखों का बचपन' कविता की मूल संवेदना लिखिए।

4. निराला की काव्यानुभूति की प्रमुख विशेषताओं का सोदाहरण विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

'वर दे' कविता की मूल संवेदना का विवेचन कीजिए।

5. सुभद्राकुमारी कुमारी चौहान की कविता 'ठुकरा दो या प्यार करो' का मूल्र प्रतिपादय स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

रश्मिरथी के तृतीय सर्ग की मूल संवेदना पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **'दो'** का निर्देशानुसार रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए : (6,6)

(क) भूषण अथवा कवि चंद नहीं
बिजली भर दे वह छंद नहीं
है कलम बंधी स्वच्छन्द नहीं;
फिर हमे बताए कौन हन्त
वीरों का कैसा हो वसंत (स्वतंत्रता प्रेम)

(ख) बैलों के कन्धों पर माची,
माची पर उल्टा हल रक्खा,
बद्धी हाथ, अधेड़ पिता जी,
माता जी, सिर गट्ठल पक्का;
पिता गए गाँवों के गोंडे,
माता घर, लड़के धाये हैं। (कृषक जीवन)

(ग) ले चल वहाँ भुलवा देकर,
मेरे नाविक ! धीरे-धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी।
अम्बर के कानों में गहरी -
निश्छल प्रेम कथा कहती हो,
तज कोलाहल की अवनी रे ! (रहस्यवाद)